भिखारी ठाकुर

द्वारा रचित कालजयी नाटक

गबरघिचोर

भिखारी ठाकुर, सा० कुतुबपुर, गुल्टेनगञ्ज, छपरा।

लोकराग

www.lokraag.com | www.bidesia.co.in | www.purabiyataan.com
facebook.com/lokraag, | https://plus.google.com/?lokraag,

contact us @ mail.lokraag@gmail.com
song listen @ www-soundcloud-com@lokraag

dyk ,o jxep dh =ekfl dh ^jxokrk* d lg;kx l tkjh

ik=&ifjp;

गलीज	– गाँव का एक परदेशी युवक।
गड़बड़ी	– गाँव का एक आवारा युवक।
घिचोर	– गलीज बहू से पैदा गड़बड़ी का बेटा।
पंच	– गाँव का एक मानिन्द आदमी।
गलीज बहू	– गलीज की पत्नी और गबरघिचोर की माँ।
	जल्लाद, समाजी, दर्शक आदि।

GABARGHICHOR

A Bhojpuri folk play

by

BHIKHARI THAKUR

गबरघिचोर

समाजी : (चौपाई)

सिरी गनेस पद सीस नवाऊँ, गबरघिचोरन के गुन गाऊँ।
बहरा से गलीज घर अइलन। मुदित भइल ना दाम कमइलन।।
मेहर के ना भइलन साथी। झूमे जस मतवाला हाथी।।
एही बिधि से दुआर पर आई। निरखन लगे लोग बहुताई।।
घरनी सुनली अइलन पिया। रहि–रहि के हुलसत बा जिया।।
ले थारी जल पाँव पखारे। आजु जनम भये सुफल हमारे।।

गलीज बहू : (गलीज से) (कवित्त)

कमल उछाह जइसे सूरूज प्रकास होत, कुमुद उछाह जइसे चन्द्रमा परसते।
भौरन उछाह जइसे आगमन बसंत जानि, मोरन उछाह जइसे बरखा बरसते।।
हंसन उछाह जइसे मानसरोवर बीच, साधन उछाह इच्छा आवत अरसते।
सबको उछाह एही भाँति उर होत अहै, हमरो उछाह स्वामी तोहरे दरसते।।

गलीज : ई झंझट कइला के कुछ काम नइखे, जल्दी बतावऽ लइका कहाँ बा।

गलीज बहू : (पति से) (गाना–पूर्वी)

सिव–सत्ती जी के पूत, देवन में मजगूत;
गिरत बानी तोहरा चरन में हो स्वामीजी!
गवना कराके गइलऽ, घर के ना सुधि कइलऽ;
मरतानी तोहरा बियोग में हो स्वामीजी!
हाथ–बाँहि धइला के, सादी–गवना कइला के;
आज ले ना कइलऽ निगाहवा हो स्वामीजी!
बबुआ भइलन पैदा, कुछ ना मिलल फैदा;
सब बिधि कइलऽ बेकैदा हो स्वामीजी!
आस मत नास करऽ, बेटा के रहे दऽ घर;
पगली के प्रान के आधार मोर हो स्वामीजी!
पोसत बानी बचेपन से, बबुआ के तन–मन से,

कसहूँ उपास आध पेट खा के हो स्वामी जी!
कहत 'भिखारी' नाई, देहु खीस बिसराई
उजरल घर के बसा दऽ मोर हो स्वामीजी!
(अपना बेटा से) ए बबुआ! गोड़ पर गिरऽ, इहे तोहार बाबू हवन।

समाजी : (चौपाई)
गिरत पुत्र पिता पग जाई, धरि के बाँह गोद बइठाई।।

गलीज : बेटा हमार चलऽ परदेस। काहे तूँ सहबऽ घरे कलेस।

गबरघिचोर : माई के संग में लेके चलऽ, राखऽ अपने पास।
छोड़िके गइला से करिहन सब नर–नारी उपहास।।

गलीज : एह पागल के छोड़ दो बेटा, चलो हमारे साथ।
फिर ना ऐसा मोका कबहूँ, लगेगा तेरे हाथ।।

गलीज बहू : बबुआ के हम सोझा राखब, देख के करब सबूर।
सब बिधि से मत करऽ स्वामी, हमरा कर्म के चकनाचूर।।

गलीज : (बेटा के जबरदस्ती बाँहि धइ के झटकार के) चलऽ बेटा, तूऽ चलऽ।
(गड़बड़ी के आगमन आ बेटा के हाथ पकड़ के अपना ओर खिंचल)

समाजी : (चौपाई)
तेहि अवसर गड़बड़ी तहँ आये। पुत्र मोर कहि रोब जमाये।।
तीनों में झगड़ा भये भारी। देखन लगे सकल नर–नारी।।
पंचित करन लगे सब लोगू। गबरघिचोरन केहि के जोगू।।
(पंच आवऽतारन)

पंच : तीन आदमी में झगरा लागल बा, झगरा छूटत नइखे, जवना पंचाइत में हम बोलाबल गइल बानी। (गलीज का ओर देखावत) : हइहे गलीज बाड़न। गलीज!

गलीज : हाँ बाबा!

पंच : ईहे गलीज हवनं बिआह कके घर में जनाना बइठा देलन। अपने चल गइलन बहरा कमाये। बाहर से ना कबहीं खत भेजलन, ना खबर भेजलन, ना पाँच रोपेया मनिआडर भेजलन। एहिजा इसवरी माया!

गलीज बो, हेने आउ। (गलीज बहू कुछ पास आवतारी) ईहे गलीज बो हऽ। एकरा एगो लइका पैदा लेले बाड़न। बबुआ गबरघिचोर हेने आवऽ (गबरघिचोर पास आवतारन) गाँव–नगर से बहरा में जाके केहू कहल ह कि गलीज तोहरा बेटा भइल बा। गलीज बहरा से आइल बाड़न, कहत बाड़न कि छँबड़ा के हम अपना जवरे बहरा लिया जाइब। गलीज बो कहतिया कि हम असरा लगा के जनमवलीं, पोसलीं–पललीं, छँबड़ा के काहें लिया जइब? हमरो के लिया चलऽ। एही बात के दूनों बेकत में झगरा बा। एही बीच में हई गड़बड़ी कहत बाड़न कि हमार बेटा हऽ। गड़बड़ी, तू ई बतावऽ कि घिचोरवा में के हो के दावा कइले बाड़ऽ?

(चौपाई)

पंच : तुम गड़बड़ी कहहु एक बारा। कइसे बेटा भइल तुम्हारा।।

गड़बड़ी : घिचोरवा हमार बेटा नूँ हऽ, महाराज!

पंच : का गलीजवा बो से तोहरे बिआह भइल रहे?

गड़बड़ी : ना।

पंच : माड़ो गाड़ि के? बाजा बजा के? नेवता नेवति के?

गड़बड़ी : ना महाराज!

पंच : तब तोर बेटा कइसे भइल रे बउराह लेके?

गड़बड़ी : ए बाबा, हम जवन रउरा से कहत बानी से सुनी। हम रास्ता धइले जात रहीं, ओने से लरिकवा के मतरिया चल आवत रहे। हमरा से कुछ गलती हो गइल।

पंच : अइसे खाली गलती बात ना बोले के। राह में गलती हो जाई, तेसे का बेटा हो जाई? कवनो सबूत बा?

गड़बड़ी : हाँ, बइठल जाव, हम साबूत देत बानी।

राह में पवलीं खाली जाली। खोजत अइलन एगो कुचाली।।
रोपेया धइलीं लेलीं निकाली। ले जा तूं खलिहा जाली।।

पंच : गड़बड़ी, हम तोहरा से ममिला पुछतानी, तूँ लगलँ गीत गावे?

गड़बड़ी : हम गीत नइखीं गावत, आपन ममिले कहलीं हाँ रावाँ से।

पंच : बाकिर हमरा ना बुझाइल हा, ए बबुआ।

गड़बड़ी : हेने आई, दू डेग बढ़ आई, हम रावाँ के समुझा देतानी। हम रासता धइले चल जात रहीं रास्ता में हमरा जाली मिलल अथवा डोंड़ा मिलल अथवा मनीबेग मिलल। ओहमें हम आपन रोपेया–पइसा धइलीं।कुछ दिन का बाद में जाली या मनीबेगवाला आपन चिन्ह गइल। त आपन मनीबेग ले जाई कि हमनरा रोपेया–ढेबुआ सहिते लेले चल जाई?

पंच : त ई बात तोहरा पहिले नूँ हमरा से कहल चाहत रहल हा। (दर्शक का ओर देखत) एह गरीब से राह में जाली मिलल अथवा डोंड़ा मिलल अथवा मनीबेग मिलल, ओह में ई आपन रोपेया–पइसा धइलस। कुछ दिन का बाद में मनीबेवाला आपन मनीबेग चिन्ह गइल, त खाली आपन ऊ मनीबेग के जंइहन कि रोपेया–ढेबुआ सहिते लेले चल जहइन? बबुआ गबरघिचोर, तूँ जो गड़बड़ी में।

गबरघिचोर : ए बाबा, हम कुछ कहबऽ।

पंच : का कहबऽ? कहे के बा से कहऽ, बाकी जाये के होई गड़बड़िये में।

गबरघिचोर : सुनहुँ सभासद असल कहूँ, झूठ में लागी पाप।
माई–बाबू छुटलन भइलन, जालीवाला बाप।

पंच : बेटा ले जो गड़बड़ी।

गलीज : हमार बेटा ह, गड़बड़ी कइसे लेके चल जइहन?

पंच : जननवाँ नूँ तोर ह, बउराह लेके।

पंच : मउगी के नूँ बाजा बजा के ले आइल बाड़ऽ। छँवड़ा के बाजा बजा के नइखऽ नूँ जनमवले? ई बतावऽ कि कतना दिन के छँबड़ा भइल आ कतना दिन पर तूँ बहरा से आइल बाड़ऽ?

गलीज : पन्द्रह बरिस भइल परदेस। ओहिजे लागल उमिर के सेस।।

बेटा ले के बहरा जाइब। फिर ना घर में लात लगाइब।।

गलीज बहू : तेरह बरिस के बबुआ भइलन। बेटा के खोजत बाबू अइलन।।

लागत नइखे तनिको लाज। हँसत बाटे सकल समाज।।

गलीज : हअऽ लाजवाल!

पंच : अइसन बेलज आदमी दुनियाँ में हम ना देखलीं। जलाये के जगहा कहीं ना मिले, त न जाके समैना का चोप में मुँहे लगा दऽ।

गलीज : ए बाबा, रउरा बइठी हम साबूत देतानीं।

गाछ लगवलीं कोंहड़ा के, लत्तर गइल पछुआर।
फरल परोसिया के छप्पर पर, से हऽ माल हमार।।

पंच : गलीज! हम तोहरा से ममिला पूछतानी, तूँ लगलऽ ध्रुपद गावे?

गलीज : हम आपन ममिला कहलीं हँ, ए बाबा!

पंच : यही में लपेट–लपेट कहलऽ ह, बाकी हमरा ना बुझाइल हा, ए बबुआ।

गजीज : ए बाबा हेने आई, हम रावाँ के समुझा देतानी। हमरा कहूँ कोंहड़ा के एगो थाला मिल गइल। ओकरा के हम ले अइलीं। अपना अँगना में रोप देलीं। ओकर सेवा सजम कइलीं। ओकर लत्तर बढ़त–बढ़त हमना छप्पर से परोसिया के छप्पर पर चल गइल। एगो कोंहड़ा जाके फर गइल। त ऊ कोंहड़वा हमार ह महाराज कि परोसिया के बा?

पंच : त ई बात पहिले नूँ हमरा से कहेला (दर्शक का ओर देखत) एह गरीब का कहीं से कोंहड़ा के थाला मिलल। अपना अँगना में ले आके रोपलस। सेवा–सजम कइलसं लत्तर पसरत–पसरत परोसी के छप्पर पर जाके कोंहड़ा फर गइल। त का छप्पर के बदौलत एकर कोंहड़वे तूर लीहन? जेकर थान तेकर कोंहड़ा। बबुआ गबरघिचोर, तूँ चल जो गलीजवा में।

गबरघिचोर : ए बाबा, हम कुछ कहबऽ।

पंच : का कहब? कहे के बा से कहऽ, बाकी जाये के होई गलीजवे में।

गबरघिचोर : सब कहलन बाबू असल, सुनहूँ पंच दे कान।
हम बेसी कइसे कहीं, बालक अबुध नादान।।

पंच : ले जो गलीज, बेटा ले जो रे।

(तीनों में हल्ला–गुल्ल होता–'बेटा हमर बा, बेटा हमर बा।')

गलीज बहू : (पंच से) ए बाबू जी, हमरा बबुआ के हो, बाँह उखाड़ल लोग दादा।

पंच : चुप रहऽ। केकर मजाल बा कि तोरा बबुआ के बाँह उखाड़ी लोग रे? मारब मूका जे पाताल में धँस जाई लोग।

गलीज बहू : बढ़नी मारो; तोरा पंचाइत कइला के।

पंच : तें अनेरे नूँ हमरा पर लाल–पियर होवऽतारिस।

गजीज बहू : लाल–पियर होखीं ना? कूदि के रावाँ हिनका के देतानी, कूदि के हुनका के देतानी। हमार बबुआ आ हमरा से कुछ पूछते नइखीं।

पंच : नाक चुअवलू, त मारब मूका जे...। तबे से नाक चुअवले बाड़ी कि पूछते नइखीं, पूछते नइखीं। तूँ केकरा से पूछ के ई सब कइले बाड़ू? हेने आवऽं तोरो से पूछब, हेने आवऽ। ई बतावऽ कि हई गड़बड़िया तोरा साथे झूठो के लंद–फद बन्हले बा कि तोरा गउ़बड़िया साथे कुछ बाटे?

गलीज बहू : जब रावाँ पूछत बानी, त हम कहत बानीं हइहे गडबड़ी बाड़न, ए बाबूजी! सँझिया–बिहनियाँ रोज आवस, ए बाबूजी!

पंच : दुपहरियों में आवत होई। कतनो गोड़ जरत होई, बाकी मानत ना होई।

गलीज बहू : कबो दुआरी पर बइठस ए बाबूजी, कबो केवारी के पाला ध के खड़ा होखस आ कइसन दोनी मुँह कइले राखसं रोज दिन के इहे दसा हम देखीं, त एक दिन हम अपना मन में बिचार कलीं आ सोचलीं कि हमरा पाले चीज बा, त हमरा छिपावल पार ना लागल, ए बाबूजी।

पंच : तोरा पाले कवनो सबूत बा?

गलीज बहू : बइठीं, साबूत हम देत हईं।

घर में रहे दूध पाँच सेर, केहू जोरन दिहल एक धार।
का पंचाइत होखत बा, घीउ साफे भइल हमार।।

पंच : गलीज बो, हम तोरा से ममिला पूछतानी आ तें लगले झूमर गावे।

गलीज बहू : हम झूमर ना गवलीं हा, ए बाबुजी! हम आपन ममिला कहलीं हाँ। रावाँ नइखे समुझ में आवत, त हेने दू डेग बढ़ि आई, हम समुझा देतानी।

पंच : कहऽ–कहऽ, ममिला में ना लजाये के। (दर्शक का ओर देखत) गलिजवा बो लाद के साफा आदमी ह।

गलीज बहू : ए बाबू! पाँच सेर दूधवा अपना देहिया के मोकरर करतानी। बाकिर जोरनवाँ के कहे में लाज लागता।

पंच : कहऽ–कहऽ, ममिला में ना लजाये के, कहऽ। अबगे त ममिला मोहड़ा पर आइल बा।

गलीज बहू : (गड़बड़ी का ओर इसारा करत)

जोरनवाँ हिनके नूँ पसेनवाँ ह, बाबूजी!

पंच : ई बात तोरा पहिले नूँ हमरा से कहेला। मानलीं कि केहू के घर में दू सेर–चार सेर दूध धइल बा। ओकरा के अँवटलस, पकवलस, टोला–महल्ला से तनीएसा जोरन ले आके ओकरा में लगा देलस। त का जोरन के बदौलत ओकर सउँसे करने उठवले चल जहहे। जेकर दूध, तेकर घीव।

गलीज बहू : जेकर दूध, तेकर घीव काहे ना ए बाबूजी! हतने भर जोरनवाँ खातिर हमरा बबुआ पर दावा कइले बाड़न।

पंच : अरे बबुआ, तूँ चल जो अपना मतरिया में।

गबरघिचोर : बाबा! हमहूँ कुछ कहबऽ।

पंच : कहबऽ का? कहे के बा से कह लऽ, बाकी जाये के बा मतरिये में।

गबरघिचोर : साँच बात कहली मइया, से हमरे मनमान।
झूठो झंझट लागल बा सुनहु पंच सज्ञान।।

पंच : ले जो गलीज बो! बेटा ले जो रे!

(तीनों में फेर झगरा सुरू हो जाता। पंच के बेइमान बनावत बा लोग।)

गलीज : (उठि के पंच के धसोरत) चललऽ हा पंचाइत करे कि हमनी में खून करावे?

पंच : हम का करीं? जेकर हम बा... सुपत होता, तेकरा के हम देतानी।

गड़बड़ी : ए बाबा, एने आई, सुनी।

पंच : कहे के बा से कहऽ। उठ–बइठ के ममिला ना होखे। जे देखी से कही कि बाबा बेइमान हवन।

गड़बड़ी : हेने आईं, बेइमान केहू ना कही।

पंच : (गड़बड़ी कि ओर दू डेग बढ़ के) का कहबे से कहऽ।

गड़बड़ी : हम रावाँ से कहतानी कि छँवड़ा के हमरा में रखवा देतीं, त रावाँ के हम दू गो रोपेया देतीं।

पंच : कहऽ हो गड़बड़ी, आज ले बाबा का रोपेया के लोभ ना भइल, त आज तोहरा दू गो रूपली से बाबा के दिन जाये के बा?

गड़बड़ी : दू गो ना– नूँ कहलीं हँ।

पंच : दू सऽ कहऽ, चार सऽ। ए रोपेया कावर ताकेवाला बाबा के जीव हवन?

गड़बड़ी : दू गो ना कहलीं हँ, दू सौ देबऽ।

पंच : हमरा दुइये गो बुझाइल ह, ए बबुआ। दू सइ कहलऽ हऽ?

गड़बड़ी : हँ, ए बाबा!

पंच : जो होने बइठ। ममिला में ना घबड़ाये के ह। गलीज–सलीज बेटा ले जइहन? तनी–मनी सवाँगन के खबरा दे दीं, त इनकर चाम खींच लिहन स।

गलीज : ए बाबा, तनी हेने आईं।

पंच : कहे के बा से ओनहीं से कहऽ, ए बबुआ!

गलीज : ना, तनी दू डेग बढ़ आई, ए बाबा! रउरा से तनी एगो भितरिया बात कहे के बा।

पंच : (गलीज का ओर दू डेग बढ़के) कहे के बा से कहऽ, ए बबुआ! जानते बाडऽ कि हम कतना भक्त आदमी ठहरलीं। बिना भोजन भइले स्नान ना होखे।

गलीज : छँबड़ा के कह–सुनके हमरा में रखबा देतीं, त रावाँ के हम पाँच सौ

रोपेया देतीं।

पंच : तोहरा अइसन लोभी आदमी से हमरा दुख हो जाला। पाँ गो रूपली से बाबा के दिन जाए के बा?

गलीज : पाँच गो ना कहलीं हँ, ए बाबा!

पंच : पाँच गो ना–नूँ पाँच सइ कहऽ, पाँच हजार कहऽ, पाँच लाख कहऽ, रोपेया कावर ताकेवाला बाबा ना हवन।

गलीज : पाँच सौ नूँ कहतानीं।

पंच : पाँच सई? हमरा बुझाहल ह कि पाँच गो कहलऽ ह। सुनऽ ए बबुआ। रोपेया–पइसा कबनो चीज ना ह। ई त हाथ के मइल ह। आज बाटे बिहने नइखे। बाकी तोहरा घर से आ हमरा घर से तोहरा दादे का बेरा से निअराह चलल आवत बा, ए बबुआ। ई निबाहे के बा। पाँच सइ नूँ कहलऽ देबे के?

गलीज : हँ ए बाबा!

पंच : जा बइठऽ जा। गड़बड़ी कादो बेटा ले जइहन। ममिला में हड़बड़ाये के ना। (गलीज बो से) गलीज बो रे?

गलीज बहू : का ए बाबूजी!

पंच : तोर ममिला फेर से देखाई।

गलीज बहू : पहिले का देखाइल हा, ए बाबूजी!

पंच : ऊ तनी ऊपरे–ऊपरे देखाइल रहल हा।

गलीज बहू : (पंच का लगे जा के) हमरा पाले त रोपेया–पइसा नइखे, ए बाबा! कह–सुन के बबुआ के हमरा में रखवा देतीं, त हम राउर सेवा–सजम का देतीं, ए बाबूजी!

(गाना–पद) गलीज बहू के विलाप

ओदर से हउअन बेटा हमार, ओदर से।
साँच बात में आँच लागत बा, पूछीं बोला के नाऊ–चमार। ओदर...
पुत्र भइल जीभ स्वाद गइल सभ, तनिको ना खइलीं बेकार। ओदर...

अब आगा पर दागा होखत बा, घेरलस ठग बटवारं। ओदर...
कहत 'भिखारी' तइयारी भइल जब, पिअला से दूध के धार। ओदर...

(चौपाई)

चारो तरफ से उठल हावा। एह में नइखे केहू के दावा।।
बबुआ अउवन बेटा हमार। पूछीं बोला के नाऊ–चमार।।
नव महीना पेट के भीतर। रहसु त पूजलीं देवता–पितर।।
जनम के समय में इ दुख भइल। इहे बुझाय जे अब जीव गइल।।
होखत रहे राम से बात। असहीं होला जीव के घात।।
लालच में ना लउके जान। बेटा दिया दऽ हे भगवान।।
बबुआ भइलन आसरा लागल। अब घेरले बा दू गो पागल।।
दूनों ओर से जोर बा भारी। राम–राम कहि रटत 'भिखारी'।।
हम अबला कछुओ ना जानी। पंच गोसइयां राखऽ पानी।।
झगड़ा के ना जानी भेद। होखत बा करेजा में छेद।।
रो–रो कहे 'भिखारी' नाई। बेआ दिया दऽ काली माई।।
कुतुबपुर में बाटे घर। हमहीं हई बेटा के जर।।
जिला छपरा हउए खास। बबुआ में लागल बा आस।।

(बेटा से बिलाप गान)

सिवसती गनपति, हरहु बेकार मति;
चरन के चेरी के इयाद राखऽ हो बबुआ।
पेटवा भीतर माँही, गम कुछ रहे नाहीं;
तबहीं से आसरा लगवलीं हो बबुआ!
बनि के तोहार कुली, लालच में गइलीं भूलि;
नव मास ढोबलीं मोटरिया हो बबुआ!
दिन–रात हूल आवे, घर ना आँगन भावे;
चलत में गोड़ भहरात रहे हो बबुआ!
जब होखे लागल पीरा, दुखवा समुझऽ हीरा;
मुखवा से कहत बानी कमती हो बबुआ!
सुनऽ दुलरू! कहीले से, चार दिन पहिले से;
सउरी में दाँत लागि जात रहे हो बबुआ!
केहू कहे हउवे दूत, केहू कहे हउवे पूत;
केहू कहे भीतरे मुअल बा हो बबुआ!

केहू कहे मरि जाई, चुरइल धइले बा माई;
साँड़ासा सँघरनी के खइलसि हो बबुआ!
अब–तब घरी रहे, ईहे सभ केहू कहे;
चमइन हाथ लाके कढ़लसि हो बबुआ!
नया भइल जनम मोर, असहीं ह पैदा तोर;
तेलवा लगाइ के अबटलीं हो बबुआ!
सुधि करऽ भइला के, गूह–मूत कइला के;
माई मत जानऽ हमें दाई जानऽ हो बबुआ!
कहत 'भिखारी' नाई, कवन करीं उपाई;
मुँहवाँ के तोहरे दुआरवा हो बबुआ!
कुतुबपुर हउवे ग्राम, रामजी सँवारऽ काम;
जाति के हजाम जिला छपरा हो बबुआ!

पंच : रे बबुआ, तें मतरिया का रोबला से मतरिये में रहबे?

गबरघिचोर : रावाँ जेकरे में कहब, तेकरे में रहब।

पंच : बाह बा, रहे के बा तोहरा, बाबा काहें आपन ईमान खराब क देस? बाबा कहिहन कि तूँ इनरा में कूद जा, त कूद जइबऽ?

गबरघिचोर : कूद जाइब।

पंच : बाबा कहिहन कि तूँ आपन जाद दे दऽ, त तूँ दे देबऽ?

गबरघिचोर : कूद जाइब!

पंच : हम कहब कि तोहरा में तीनों के हक बराबरे बा। तोहरा देह नापि के काटि के तीन गो टुकड़ा कइल जाईं। तीनें में गोटा परी, तोरा कबूल बा?

गबरघिचोर : हँ बाबा! कबूल बा।

पंच : कबूल बा नूँ?

गबरघिचोर : कबूल बा।

पंच : जल्लाद के बोलावऽ रे!

समाजी : देहु खबर जल्लाद के जाई। सुनत बात आवत हरखाई।।

कर हथियार धार बनवाई। सभा मध्य में पहुँचे आई।।

पंच : (गबरघिचोर से) बबुआ सूत रहऽ।

गबरघिचोर : हम कुछ कहबऽ

पंच : अच्छा कहऽ

(पंच जल्लाद फरका बइठत बाड़ें)

गबरघिचोर : (रो–रो के)

अइसन लिखालन करम में बिधाता।
सुंदर नर–तन बिमल पाइ के टूटल जगत के नाता।
हीत–मित्र केहू काम न आवत, बैरी भइलन पितु–माता।
सभा–मध्य में बध होखत बानी, सुनहु राम सुखदाता।
बड़ उपहास भइल घिचोर के , एको ना 'भिखारी' से कहाता।।

(चौपाई)

तीन जना में झगड़ा भइल। गबरघिचोरन के जीव गइल।।
जेकर हिस्सा जहाँ से होई। काटि के बाँटि लेहु सब कोई।।
करनी के फल परल कपारां तन पर चक्कू चलल हमारा।।
बड़का दुख परल जगबन्दन। भइल अकाल मृत्यु रघुनन्दन।।
जरिये चलली मइया कुचाली। छुड़ी का हाथ भइलि हलाली।।
रामचन्द्र अवधेस कुमारा। बहे चाहत बा खून के धारा।।
लखन, भरत, सतरूघन भइया। भाव से पार करहु मोर नइया।।
धनुस–बान धरि चारो भाई। एह अवसर पर होखऽ सहाई।।
ना कइलीं तीरथ–ब्रथ–दान। बालकपन बा हे भगवान।।
माई–बाप के सेवा नहीं। नाहक नर भइलीं जग माहीं।।
सिर पर पहुँचल तुरते काल। देरी भइल दसरथि के लाल।
भइल सिकाइत जग में भारी। दूगो बाप एक महतारी।।
एह जीवन ले गूअल बेस। सुभ गति दे दऽ सिरी अवधेस।।
जयति–जयति जय कौसल–किसोरा। नइखे आवत करे निहोर।।
दाया तोर मोर अगयाना। करिहन तुरत परान पेथाना।।
कुतुबपुर के कहे 'भिखारी'। जइसन मरजी होय तिहारी।।

(गाना)

धन–धन मालिक माया तेरा, लोक–बेद सब गाता है।
तीन लोक के बीच में एगो लिखनेवाला बिधाता है।
ऊँच–नीच करनी जैसा करता, वैसा फल पाता है।
माई, भाई, बाबू, कबीला झूठ जगत के नाता है।
गबरघिचोरन आज जगत से जमपुर को चल जाता है।
सभा–मध्य जल्लाद का हाथे छुड़ी गला से खाता है।
सूर्य उदय जब तक जीवन अब तुरत रात चलि आता है।
अंधकार का डर से मनुआँ रोकर के पछताता है।
कुतुबपुर के नाई 'भिखारी' तीनेां झगड़ा गाता है।
महादेव ओर पारबती के चरन में सीस नवाता है।

पंच : बस–बस! बस सूनऽ हेने

(गड़बड़ी के आगमन आ बेटा के हाथ पकड़ के अपना ओर खिंचल)

गड़बड़ी : देखिहऽ बाबा, ठीक से नपिहऽ, एने–ओने ना होखे पावे।

गलीज : हँ बाबा, ठीक से नापब।

पंच : रे बउराह सभ, जहाँ बबे बाड़न, तहाँ एने–ओने होई (जल्लाद से) रे एक छेव एहिजा से काटऽ, एक छेव एहिजा से काटऽ।

जल्लाद : ए बाबा, हमहूँ कुछ कहबऽ।

पंच : तें का कहतबे, कहँ।

जल्लाद : जै गो टुकड़ा करब हू! फी चवन्नी से लेहब ना कम।।

पंच : कटइया त तोर मोनासिब बा। दऽ हो गड़बड़ी, चार आना पइसा दऽ।

गड़बड़ी : लीं बाबा।

पंच : गलीज, चार आना पइसा दऽ।

गलीज : लीं सरकार!

पंच : गलीज बो रे।

गलीज बहू : का एक बाबूजी?

पंच : चार आना पइसा दे तेहूँ।

गलीज बहू : चारा आना पइसा का होई, ए बाबूजी!

पंच : तोरा छँवड़ा के कटाई देवे के बा।

गलीज बहू : ना ए बाबूजी, जिअते दूनों जाना में केहू के दे दीं। बाकि लड़का के मत कटवाईं

पंच : देख तोरा बुझात नइखे, हम पुरान हो के तोरा के समुझा देतानीं। तोर जनमल ह, तोरो एक टुकड़ा हिस्सा मिल जाई, त तोर मन के अरमान रह जाई।

गलीज बहू : ना हमरा लडका के मत कटवाई, ए बाबू! जिअते दूनो जना में केहू एक जना के दे दीं।

गड़बड़ी : ए महाराज! दुइये टुकड़ा करवाई, ई झगरा छूटे ना दीही।

गलीज : ए महाराज ! दुइये टुकड़ा करवाई।

जल्लाद : काटीं?

पंच : (हाथ से रोकत) रहऽ। हई गड़बड़ी कहत बाड़न–दू टुकड़ा हो जाय, हऊ गलीज कहताड़न–दु टुकड़ा हो जाय। जेकरा अपना बेटा के दाह नइखे, तेकर बेटा कइसन? बेटा के दाह बा मतरिया के उठाव बेटा, ले जो गलीज बो!

(गलीज बो बेटा ले जा तारी।)

समाजी : ज्यों बेटा माता के संग जाये। त्यों गलीज –गड़बड़ी लजाये।।

पंच : गाना ऊहे ह, हेह में मालिक के नाम होयं। नकल तमासा ऊहे चीज ह, जे में धर्म के चर्चा होय। 'गबरघिचोर' नाटक में धर्म इहे समुझे के चाहीं, जे गबरघिचोर के मतारी कइसन दुख कहि के रोवल बाड़ी। गाना में, चौपाई में आ पूर्वी में जइसन लड़िका होखे में मतारी के दुख होला, जवना दुख में मतारी लोग के प्रान छूटि जला, से सब बरतन करत बाड़ी। ई बात दुनियाँ में बेटा वास्ते उपदेस बा। गबर–घिचोर के मतारी एगो आ बाप दूगा। से बेटा पंच के तजबीज से आपन प्रान दे देबे पर तइयार बाड़न। ईश्वर से विनय करत बाड़न जे हम मतारी–बाप के कुछ

सेवा ना कइलीं। एह बात के बेटा का मोह बा। बाकी आजकल के जे बेटा असल बा, से कह देता जे पंच के बात ना मानबऽ। खास करके उनुकरा अपने जान के फिकिर बा। माता–पिता के सेवा में फिकिर तनिको नइखे।

सभी के अन्दर गबरघिचोर कइसन चौपाई7 कहत बाड़न :–

माई–बाप के सेवा नाहीं।
नाहक नर भइलीं जग माहीं।।

□□□□

GABARGHICHOR

A Bhojpuri folk play

by

BHIKHARI THAKUR

Born: December 18, 1887, Saran district
Died: July 10, 1971

---

presented by
LOKRAAG.COM | BIDESIA.CO.IN
RANGVARTA.COM
10 July 2015